ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 46 कुल पृष्ठ-8 31 अगस्त से 6 सितम्बर, 2023 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 श्रा. कृ.-10

मॉरीशस में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 27 से 30 जुलाई, 2023 की तिथियों में हुआ सम्पन्न

मॉरीशस के राष्ट्रपति उद्घाटन सत्र तथा उपप्रधानमंत्री समापन समारोह में हुए शामिल

महासम्मेलन के अतिरिक्त लगभग 20 आर्य समाजों के कार्यक्रमों में शामिल हुए भारत के प्रतिनिधि

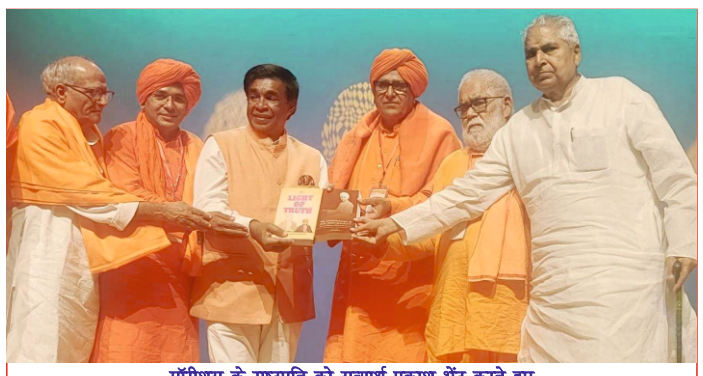

मॉरीशस के राष्ट्रपति को सत्यार्थ प्रकाश भेंट करते हुए
सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी, महामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी,
कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी तथा स्वामी आदित्यवेश जी

आर्य सभा मॉरीशस द्वारा चार दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिनांक 27 जुलाई से 30 जुलाई, 2023 तक आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में मुख्य विषय "गिरमिटिया देशों में आर्य समाज" रखा गया। इस सम्मेलन का उद्घाटन मॉरीशस के राष्ट्रपति महामहिम पृथ्वीराज सिंह रूपन जी ने भारत से पधारे आर्य नेता स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में किया। इस अवसर पर भारत से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के महामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश, दक्षिण अफ्रीका से स्वामी वेदानन्द मुख्य वक्ता रहे। उद्घाटन कार्यक्रम का संचालन मॉरीशस आर्य सभा के मंत्री श्री विजय रामचरण ने किया।

भारत के प्रतिनिधि मंडल ने इस अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति को अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश तथा प्रवासी की आत्मकथा नामक पुस्तक भेंट की गई। राष्ट्रपति ने अपने उद्बोधन में कहा कि मॉरीशस देश की आजादी से लेकर, सांस्कृतिक उत्थान, सामाजिक विकास तथा आर्थिक विकास में आर्य समाज का विशेष योगदान रहा है। उन्होंने गिरमिटिया देशों से आए सभी प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा कि हमें अपने पूर्वजों के बलिदान से प्रेरणा लेकर मेहनत के रास्ते पर चलना चाहिए। उन्होंने कहा कि कभी मजदूर बनाकर लाए गए भारतीयों की संतान आज देश में प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति तथा अन्य बड़े पदों पर हैं तो ये सिर्फ हमारे बुजुर्गों की मेहनत के कारण हुआ। आज हम उनको भी अपनी ओर से श्रद्धांजलि देते हैं।

स्वामी आर्यवेश जी ने कहा की आर्य समाज मॉरीशस के कंधों पर प्राचीन वैदिक संस्कृति को अपने आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने की बड़ी जिम्मेदारी है।

प्रो.विट्ठल राव आर्य ने कहा कि आर्य समाज वैश्विक मुद्दों पर सामूहिक कार्य करने का अपना कार्यक्रम बना रहा है। आर्य सभा मॉरीशस के प्रधान राजेंद्र प्रसाद ने सभी का आभार प्रकट किया।

स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि आज मॉरीशस में पूर्वजों के सपने साकार होते देख कर खुशी है। उन्होंने यहां की राजनीति को अपने हाथों में लिया है। अब युवाओं को सांस्कृतिक तथा सामाजिक मूल्यों को अपने जीवन में और ज्यादा आत्मसात करने की आवश्यकता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के उपमंत्री तथा भारतीय दल के सदस्य श्री मधुर प्रकाश जी ने बताया कि चार दिन तक चले इस कार्यक्रम में भारत, हॉलैंड, सूरीनाम, फिजी, दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधियों ने भाग लिया तथा पेपर भी पढ़े।

शेष पृष्ठ 8 पर

मॉरीशस के उपप्रधानमंत्री जी को
सत्यार्थ प्रकाश एवं मोमेन्टो भेंट करते हुए
सार्वदेशिक सभा के महामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी

मॉरीशस के प्रतिनिधि मण्डल के साथ सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी तथा महामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

श्रीकृष्ण : चरित्र का आधार एवं स्वरूप आलोचनात्मक दृष्टिकोण

– डॉ. प्रेमचन्द श्रीधर

देखो! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है, जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जा दासी से समागम, पर स्त्रियों से रासमण्डल, क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण जी में लगाए हैं। इसको पढ़-पढ़ा, सुन-सुना के अन्य मत वाले श्रीकृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्रीकृष्ण जी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्यों कर होती?''

- सत्यार्थ प्रकाश एकादश समुल्लास

आदर्श चरित्र

अपने ग्रंथ 'कृष्ण चरित्र' की उपक्रमणिका में श्री बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय लिखते हैं- ''कृणस्तु भगवान् स्वयं''। यही जनता का विश्वास है। तो सदा सर्वदा कृष्णाराधना, कृष्ण कथा, धर्मोन्नति की साधक हैं। सब समय ईश्वर का स्मरण करने की अपेक्षा मनुष्य का मंगल और क्या हो सकता है? परन्तु ये लोग भगवान के किस स्वरूप की भावना करते हैं? जो बाल्यकाल में चोर हैं, दधि और नवनीत चुराकर खाता है, जो किशोरावस्था में पर स्त्रीगामी है, असंख्य गोपियों को पतिव्रत धर्म से भ्रष्ट करता है, जो प्रौढ़ आयु में बन्धक और शत्रु है, धोखा देकर द्रोण आदि का प्राणहरण कराता है? भगवान का चरित्र क्या ऐसा ही होता है? जो स्वयं शुद्ध सत्वरूप है जिनमें सब प्रकार की शुद्धि उद्भुत है, जिनका नाम लेने से अशुद्धि और अपुण्य दूर हो जाता है। मनुष्य देश धारण करके क्या यह समस्त पापाचरण उस भगवत चरित्र में संलग्न है?

आगे इसमें पृष्ठ 12 पर लिखा है। भगवान श्री कृष्ण के किस प्रकार के चरित्र का पुराणेतिहास में वर्णन प्रस्तुत हुआ है- यह जानने के लिए मैंने यथा सम्भव पुराणेतिहास का विमर्श किया है। और मैं इस परिणाम पर पहुंचा हूँ कि कृष्ण सम्बन्धी जो समस्त पाप कथा जन समाज में प्रचलित हो गई है वह समस्त निर्मूल है और मनगढ़न्त कथाओं को बाहर निकाल देने पर कृष्ण चरित्र में जो कुछ शेष बच जाता है वह अति विशुद्ध परम पवित्र एवं अतिशय महान है। लगता है कि ऐसा सर्वगुण सम्पन्न, समस्त पाप संपर्श शून्य, आदर्श चरित्र अन्यत्र कहीं भी नहीं है। न किसी देश के इतिहास में और न किसी देश के काव्य में है।

इतिहास की दृष्टि

महर्षि दयानन्द के शब्दों में श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। इससे स्पष्ट है कि महाभारत एक ऐतिहासिक महत्व का ग्रंथ है। इतिहास किसको कहते हैं? वस्तुतः पुरावृत्त (अर्थात् जो घटनाएं पहले घटित हो चुकी हैं उनकी आवृत्ति) के अतिरिक्त किसी अन्य को इतिहास नहीं कहा जा सकता।

धर्मार्थकाममोक्षाणाम् उपदेश समन्वितम्।
पूर्ववृत्त कथायुक्तम् इतिहासं प्रचक्षते।।

भारतवर्ष के समस्त प्राचीन ग्रंथों के बीच केवल महाभारत और रामायण को इतिहास नाम प्राप्त है। किन्तु दुर्भाग्य से आज महाभारत का जो स्वरूप उपलब्ध है उसमें कथा का इतना विस्तार हुआ है कि उसका बहुत सा भाग स्पष्टतः अलीक, असम्भव और अनैतिहासिक लगता है। प्राचीन महाभारत के ऊपर अनेक काल्पनिक प्रक्षेप चिपका दिए गए हैं, जिनके भीतर प्राचीन महाभारत निमग्न हो गया है। परन्तु इसमें जो भी ऐतिहासिक है वह प्रारम्भिक महाभारत का है और हम केवल उसी अंश को स्वीकार करते हैं।

इसका प्रमाण हम पर्व संग्रह अध्याय से ही देते हैं। अनुक्रमणिका अध्याय के 102 में तो श्लोक में लिखा है कि व्यास देवी जी ने डेढ़ सौ श्लोकों की अनुक्रमणिका लिखी थीः-

ततोऽध्यर्द्धशतं भूयः संक्षिप्त कृतवानृषिः।
अनुक्रमणिकाध्यायं वृत्तान्तानां सपर्वणः।।

अब अनुक्रमणिका अध्याय में कुल 262 श्लोक पाए जाते हैं। अतः पर्व संग्रह अध्याय के लिखे जाने के उपरान्त इस अनुक्रमणिका में ही 122 श्लोक अधिक हो गये। ये सब प्रक्षिप्त हैं। ठीक इसी तरह साठ लाख और एक लाख श्लोकों की कथा में प्रक्षेपों की भरमार है, अस्तु। महाभारत को बार-बार पढ़ने के बाद श्री चट्टोपाध्याय ने जो निर्वचन किया है उससे महाभारत को उन्होंने तीन स्तरों में विभक्त किया है। हम उनके निष्कर्ष को तर्क संगत और युक्तियुक्त मानते हैं।

पहले स्तर में पांडवादि का वृतान्त एवं प्रसंग प्राप्त श्रीकृष्ण की कथा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

दूसरे स्थान पर जो किसी अन्य कवि की रचना जान पड़ता है, काव्य चातुर्य की कमी नहीं है परन्तु इस स्तर को यदि महाभारत से निकाल भी दें तो मूल कथा की कोई क्षति नहीं होगी। स्पष्ट है कि यह भाग प्रक्षिप्त है और परवर्ती ब्राह्मणों ने जो कुछ लिखा अच्छा लगने पर उसे महाभारत में जोड़ दिया।

पहले और दूसरे में मुख्य अन्तर यह है कि पहले में श्रीकृष्ण के चरित्र का वर्णन ईश्वर अथवा विष्णु के अवतार के रूप में नहीं हुआ वे स्वयं ही देवत्व को स्वीकार नहीं करते और मानवी भिन्न दैवी शक्ति द्वारा किसी कर्म को सम्पन्न नहीं करते। परन्तु दूसरे में स्पष्टतः विष्णु का अवतार अथवा नारायण कहकर परिचित एवं चर्चित हैं वे स्वयं अपने ईश्वरत्व की घोषणा करते हैं। और केवल उनके ईश्वरत्व का प्रतिपादन करने के लिए प्रयत्नशील हैं। परित्राणाय साधूनां विनाशय च दुष्कृतां सम्भवामि युगे युगे।

तीसरे स्तर की रचना तो अनेक शताब्दियों में हुई। तब इसे पंचम वेद का नाम दे दिया ताकि जन सामान्य की इसमें श्रद्धा बढ़ जाए और इस नए रूप में अपना ली जाए। तृतीय स्तर से परिपूर्ण महाभारत का इस प्रकार का अध्ययन लोक शिक्षा के उद्देश्य से

परवर्तीब्राह्मणों ने जोड़ दिया। श्री मद्भागवत के प्रथम स्कन्ध में आया हैः-

स्त्री शूद्र द्विज बन्धूनां त्रयी न श्रुतिगोचरा।
कर्मश्रयसी मूढ़ानां श्रेय एव भवेदिह।
इतिभारत प्राख्यानं कृपया मुनिना कृतम्।

स्कन्ध अ. 4, 25

ऊपर के सारे विवरण से स्पष्ट है कि तीनों स्तरों में से केवल प्रथम ही प्राचीन है इस कारण इसी को मौलिक मानना पड़ेगा। जो कुछ इसमें नहीं है वह दूसरे और तीसरे स्तर का है, कवि कल्पित और अनैतिहासिक है। इसलिए निश्चित रूपेण त्याज्य है। इस प्रकार महाभारत का केवल एक चौथाई अंश ही मौलिक है और उसी को आधार मानकर हमें कृष्ण के चरित्र पर विचार करना चाहिए। श्रीकृष्ण का चरित्र हमें इसी आधार पर मान्य है।

पुराणादि ग्रंथों में

जहां तक श्री कृष्ण के चरित्र के लिए अन्य ग्रंथों का प्रश्न है, महाभारत के अतिरिक्त ब्रह्म पुराण, विष्णु पुराण, भागवत और ब्रह्मवैवर्त में वह प्राप्य है। इसके अतिरिक्त भागवत और ब्रह्मवैवर्त हरिवंश में जो कि महाभारत का परवर्ती ग्रंथ है श्री कृष्ण कथा का वर्णन है। परन्तु जैसा कि हमने ऊपर विश्लेषण प्रस्तुत किया है इससे स्पष्ट है कि पुराणों में श्रीकृष्ण के जीवन को कल्पनापूर्ण तथा अति रंजित रूप में प्रस्तुत किया गया है।

वस्त्रहरण के प्रसंग में हम श्री चट्टोपाध्याय की निम्न पंक्तियां उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं कि किस प्रकार श्रीकृष्ण चरित्र के वर्णन में महाभारत के बाद अलोकता, अत्युक्ति और अतिरंजिता आ गई है। श्री बंकिमचन्द्र लिखते हैं- महाभारत के पश्चात विष्णुपुराण, हरिवंश और भागवत पुराण में कथा की उत्तरोत्तर वृद्धि होती जाती है। ब्रज गोपी तत्व महाभारत में नहीं पाया जाता। विष्णु पुराण में इस प्रसंग में पवित्रता है, हरिवंश में कुछ विलासिता का समावेश हुआ है, फिर भागवत में आदि रस का विस्तार हुआ है, अन्त में ब्रह्मवैवर्त में तो उसका प्रवाह बन गया है।

कृष्ण चरित्र पृष्ठ 84 से जहां तक भागवत का सम्बन्ध है महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में स्पष्ट किया है कि इसके रचयिता गोपदेव हैं जो कि गीत गोविन्द के लेखक जयदेव के भाई थे। ये देवगिरि के राजा 'हिमाद्रि' के सभासद थे। इनका काल त्रयोदश शताब्दि माना गया है। इससे यह भी स्पष्ट है कि भागवत की रचना त्रयोदश शताब्दी में हुई। इस भागवत में श्रीकृष्ण के चरित्र को कल्पनापूर्ण अथवा अत्युक्ति द्वारा अतिरंजित कर दिया गया है। यह प्रायः अलीक, अनैसर्गिक और असम्भव कथाओं का संग्रह मात्र है। भागवत के इसी अत्युक्तिपूर्ण तथा अतिरंजित प्रचार के कारण श्री कृष्ण के चरित्र पर अनेक अनुचित और मनमाने दोष लगाये गए हैं।

श्री कृष्ण के चरित्र का स्वरूप

हमारी दृष्टि में श्रीकृष्ण लोकनायक हैं, राष्ट्रनायक हैं जिन्होंने भारत में महाराज युधिष्ठिर के चक्रवर्ती राज्य की स्थापना की। कविमाघ के एक श्लोक पर ध्यान दीजिए-

सा विभूतिरनुभाव सम्पादांभूयसी तव यदायतायति।
एतदूढ़गुरुभार भारतवर्षमाद्य मम वर्तते वशे।

शिशुपाल वध 14/5

हे भारी भार संभाले श्री कृष्ण, आपकी कृपा का यह कितना चमत्कार है कि आज सारा भारतवर्ष अधिकार में है।

शिशुपाल वध में युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण को इन शब्दों से सम्बोधित किया है। ऊढगुरुभार इस संक्षिप्त से सम्बोधन में श्री कृष्ण के जीवन का सारा स्तर आ गया है। वे युधिष्ठिर के अश्वमेघ रचवाने वाले लोकनायक नीतिवान कृष्ण हैं, राष्ट्र नायक कृष्ण हैं। श्रीकृष्ण महाभारत के श्रेष्ठ पुरुष हैं। दुर्योधन के शब्दों मेंः-

त्वञ्च श्रेष्ठतमो लोके सतामद्य जनार्दन।

उद्योग पर्व 6-14

श्री कृष्ण की पूज्यता का प्रतिपादन करते हुए सभा पर्व में अर्धाहरण के अवसर पर कहा-

वेद वेदांगम विज्ञानं बलं चापयधिकं तथा।
नृणां लोके हि कोऽन्यो अस्ति विशिष्टि केशवादृते।।
दानं दाक्ष्यं श्रुतं शौर्यं हीः कीर्तिबुद्धिरुत्तमा।
सन्नतिः श्रीधृतिस्तुष्टिः पुष्टिश्च नियताच्युते।।

सभा पर्व 38, 19-20

हमारे कृष्ण योगेश्वर कृष्ण हैं। विवाह के पश्चात पति-पत्नी का पुत्र की प्राप्ति के लिए बारह वर्ष ब्रह्मचर्य पूर्वक हिमालय के दामन में तपस्या करना गृहस्थ जीवन का आदर्श संयम है।

सौप्तिक पर्व के 12, 30-31 श्लोकों पर ध्यान दीजिएः-

ब्रह्मचर्य महद्घोरं चीर्त्वांद्वादशवार्षिकम्।
हिमवत पार्श्वमभ्येत्व यो मया तपसार्जितः।।
समान व्रत चारिण्या रुक्मिण्यां योऽन्वजयात।
सनत्कुमारस्तेजस्वी प्रद्युम्नो नाम वै सुतः।।

हमारे कृष्ण सुदर्शन चक्रधारी, अर्जुन को व्यामोहपाश से मुक्त करने वाले महान ज्ञानी कृष्ण हैं। जिनके गीता के उपदेश के बाद अर्जुन कह उठा-

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।
स्थितोऽस्मि गत सन्देहः करिष्ये वचनं तव।।

गीता अ. 18 श्लोक 62

हम ऐसे योगेश्वर कृष्ण को, लोकनायक कृष्ण को, राष्ट्रनायक कृष्ण को, ज्ञान और श्री के भंडार कृष्ण को उनके पावन जन्म दिवस पर श्रद्धा से स्मरण करते हैं। श्री कृष्ण के ऐसे ही चरित्र का हम सब अनुसरण करें।

संजय ने सच कहा था-

यत्र योगेश्वरः कृष्णोयत्र पार्थोधनुर्धरः।
तत्र श्री विजयोभूतिर्धुवा नीतिर्मतिर्मम।

जहां योगेश्वर कृष्ण हैं, जहां धनुर्धर अर्जुन हैं, वहां लक्ष्मी है, विजय है, अटूट नीति है। यह मेरी दृढ़ धारणा है।

- ई/36, रणजीत सिंह मार्ग
आदर्शनगर, दिल्ली-33

श्रेष्ठ परम्पराओं की रक्षा करें

— अध्यापक देवराज आर्य

तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि, ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धियाकृतान्।
अनुल्बणं वयत् जोगुवामपो, मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।। ऋ० १०/५३/६

अर्थ : हे कर्मशील मनुष्य (रजसः) संसार का (तन्तुम्) ताना बाना (तन्वन्) बुनता हुआ भी (भानुम्) प्रकाश या सूर्य के (अन्विहि) पीछे चल, अनुसरण कर अर्थात् उसको आदर्श मानकर व्यवहार कर। (धियाकृतान्) बुद्धि द्वारा बनाये गये या परिष्कृत किए हुए (ज्योतिष्मतः) ज्योति से युक्त (पथः) मार्गों की (रक्ष) रक्षा कर अर्थात् ज्ञानयुक्त मार्गो पर चल। (जोगुवाम्) निरन्तर ज्ञान और कर्म अनुष्ठान करने वालों के अर्थात् विद्वानों और सामगान करने वाले लोगों के (अनुल्बणम्) उलझन रहित, यथोचित (अपः) कर्मों को (वयत्) विस्तृत करो, फैलाओ। (मनुः+भव) मनुष्य या मननशील बनो (दैव्यं जनम्) दिव्यगुण, कर्म, स्वभाव वाली संतान या समाज को (जनया) उत्पन्न करो।

इस वेदमंत्र में मनुष्य को समझाया और बताया गया है कि तू सांसारिक कर्त्तव्य कर्मों और व्यवहारों को ठीक प्रकार चलाने के लिए सूर्य का अनुकरण कर, उसको अपने जीवन का आदर्श मानकर ज्ञान–युक्त कर्म करता हुआ चल।

मनुष्य जीवन की सफलता और इसके उद्देश्य की प्राप्ति हेतु कितना सुन्दर मार्ग वेद ने दर्शाया है कि जीवन एक तन्तु है। जिस प्रकार जुलाहा कपड़ा बुनने के लिए ताना–बाना तानकर अपना कार्य आरम्भ करता है इसी प्रकार मनुष्य अपने जीवन में अनेक कार्यों का ताना–बाना बुनकर कार्य चलाता है। जीवन में अनेक प्रकार के कर्मों और संस्कारों के सूत ओत–प्रोत हैं। इसलिये वेद ने जीवन को तन्तु और मनुष्य को उसका तन्तुवाय कहा है। मनुष्य का जीवन भी एक यज्ञ है और मन की सूक्ष्म प्रवृत्तियाँ उस यज्ञ का ताना–बाना हैं। मनुष्य जीवन का यह ताना–बाना किसी भी प्रकार बंद नहीं किया जा सकता। बहुत से लोग या मत–मतान्तर दूसरे लोगों को यह शिक्षा देते फिरते हैं कि सांसारिक धंधों को करने की कोई आवश्यकता नहीं ''ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या'' केवल ब्रह्म ही सत्य है और संसार का झगड़ा झूठा है। इससे अलग होकर बैठ जाओ, गुरुओं की सेवा करो तथा काम करने की कोई आवश्यकता नहीं है। उन लोगों से पूछो कि तब जीवन निर्वाह कैसे चलेगा और उस ब्रह्म की प्राप्ति भी बिना ज्ञान के कैसे हो पाएगी? ब्रह्म प्राप्ति के लिए ज्ञान अर्जित करना और उस मार्ग पर चलना भी तो बहुत बड़ा और कठिन कार्य है। वेद का दृष्टिकोण स्पष्ट है कि 'तन्तुं तन्वन्' अर्थात् अपना जो कर्त्तव्य कर्म है उसको ठीक प्रकार पूरा करते हुए आप जिस वर्ण या आश्रम में हैं, उसके धर्म को पूरी तरह निष्ठापूर्वक निभाते हुए अपने सामाजिक धर्म और व्यवहारों को ठीक प्रकार चलाते हुए अपना जीवन यापन करो। परन्तु इस जीवन यज्ञ में कोई आहुति बिना वेद मंत्र बोले ही न आहुत हो जाये इसके लिए एक काम करना कि (रजसो भानुमन्विहि) आकाश के सूर्य को अपने जीवन का आदर्श मानकर उसके अनुसार काम करना। सूर्य की भांति तप–त्याग, परिश्रम तथा ज्ञान के प्रकाश से तेजस्वी बनकर संसार के अज्ञानरूपी अंधकार को हरते चले जाना। अज्ञान और विषय–वासनाओं के चक्र में फंस कर वेद–मार्ग की राह मत भुला देना।

सूर्य नियमित रूप से ठीक समय पर उदित होता है और निश्चित समय पर ही अस्त होता है, हम भी अपने जीवन में प्रत्येक कार्य निश्चित समय पर करने का अभ्यास करें, अर्थात् अपनी जीवन पद्धति नियमित बनायें।

सूर्य से हम परोपकार और समानता का व्यवहार सीखें। हमारे भू–मण्डल का सारा कार्य व्यवहार उसी के ऊपर आधारित है। संसार के सभी जीव–जन्तुओं और वनस्पति आदि को उसी से जीवन मिलता है। सूर्य की भांति हमारा जीवन भी संसार के सभी जीव–जन्तुओं का जीवन दाता अर्थात् सहारा देने वाला हो। हमारी प्रेरणा से उनके जीवन में नव–जीवन का संचार हो। सूर्य की **(जिस प्रकार अपने घरों, सड़कों और मार्गों को हम बार-बार साफ करते हैं फिर भी कई बार उनमें कूड़ा-कर्कट, ईंट-पत्थर या रेत मिट्टी रह जाती है। इसी प्रकार धर्म-मार्ग में भी काम करते समय ईर्ष्या-द्वेष, छल-कपट, स्वार्थ और भ्रष्टाचार रूपी कंकर-पत्थर रुकावट डाला करते हैं।)** किरणें संसार को रोग के कीटाणुओं से रहित कर देती हैं, ऐसे ही हम वैदिक ज्ञान के प्रकाश द्वारा संसार के अज्ञान रूपी अंधकार को नष्ट करते चले जायें जिससे वैदिक ज्ञान का उदय होता चला जाये।

सूर्य सदैव अपनी परिधि में घूमता है हम भी मानवता रूपी परिधि में रह कर सब कार्य करें, सूर्य को अपने जीवन का आदर्श बनायें। यह तभी संभव हो सकता है जब हम स्वयं को तप, त्याग और ज्ञान–विज्ञान तथा वैदिक साधना द्वारा ज्योतिर्मय कर लेते हैं क्योंकि एक प्रज्ज्वलित दीपक अनेक बुझे हुए दीपकों को जलाकर ज्योति प्रदान कर सकता है परन्तु हजारों बुझे हुए दीपक एक बुझे हुए दीपक को भी प्रज्ज्वलित नहीं कर सकते। ''भानुमन्विहि'' का यही अर्थ है कि हम संसार में सूर्य की भांति ज्ञान शिखर पर रहकर अपने द्वारा अर्जित वेद–ज्ञान द्वारा संसार को वेद–ज्योति से ज्योतिर्मय करते चलें तथा अज्ञान रूपी तिमिर को नष्ट कर डालें।

मंत्र का अगला वाक्य कितने महत्व का है, विचार करें–

''ज्योष्मितःपथो रक्ष धियाकृतान्''

अर्थात् बुद्धि द्वारा बनाये गये प्रकाश मार्गों की रक्षा कर। कैसा ज्ञान है वह? बुद्धि से परिष्कृत किया हुआ, ऋषियों द्वारा प्रदत्त और ज्योति से युक्त ज्ञान मार्गों पर चल कर उसकी रक्षा करें। जैसे सूर्य अपने तेज से भौतिक जगत् को प्रकाशित करता है, उसी प्रकार विद्वान्, बुद्धिमान और ज्ञान लोग अपनी बुद्धि के प्रकाश से ज्ञान मार्गों को प्रशस्त करते हैं। कैसा है वह ज्ञान? वह ज्ञान कोई साधारण ज्ञानी नहीं है। परमात्मा द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान जो सृष्टि के आरंभ में ऋषियों के हृदय में दिया गया और उन्होंने उस ज्ञान को अपनी बुद्धि द्वारा संसार के कल्याणार्थ जन–जन तक पहुँचाने का प्रयत्न किया है। ऐसे उपयोगी और सर्वहितैषी ज्ञान की हम रक्षा करें और उसको प्रसारित करने का पूर्ण यत्न करें। कैसे हो इस वेद के ज्ञान का प्रचार–प्रसार? बुद्धि द्वारा वेद–शास्त्रों को पढ़ने, उनकी शिक्षाओं पर आचरण करने, अपना कुछ समय कर्त्तव्यभाव से समाज में वेद प्रचार हेतु लगाने से इस वेद ज्ञान की रक्षा तथा प्रचार–प्रसार हो सकता है। इसके लिए ईर्ष्या–द्वेष, छल–कपट का त्याग तथा तीनों ऐषणाओं से दूर रह कर तप, त्याग एवं कर्त्तव्यपालन को प्राथमिकता देनी पड़ेगी। महर्षि दयानन्द ने ज्ञान मार्गों की रक्षा के लिए आर्य समाज के तीसरे नियमोद्देश्य में लिखा है 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।'

आत्म चिन्तन करके देखें, अपने मन में बुद्धिपूर्वक विचार करें, क्या हम इस नियम या किसी भी नियम की ठीक प्रकार पालना कर रहे हैं? जब हम वेद का पढ़ना–पढ़ाना जो कि परम–धर्म हमारे लिये लिखा है, उसको ही जीवन में नहीं उतार सके तो वेद–विद्या के ऊपर आचरण कैसे होगा और आठवें नियमानुसार अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि कैसे हो जायेगी? जब यह सब कुछ नहीं कर सकते तो ''ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धियाकृतान्'' का नारा सार्थक नहीं हो सकता। यही कारण है कि आज समाज आगे बढ़ने की अपेक्षा ज्ञान मार्गों की रक्षा और ज्ञान का प्रचार करने के स्थान पर ऐषणाओं में उलझ गया है। चारों वर्ण और चारों आश्रम धन और मान के पीछे अपनी पूरी शक्ति के साथ लगे हुए हैं।

मान लीजिए आपने किसी धार्मिक कार्य जैसे वेद–प्रचार, अनाथ–पालन, गौरक्षा, राष्ट्र उत्थान, धर्मार्थ औषधालय अथवा मानवता के हितार्थ दान देना प्रारम्भ किया है, आपके दान देने की प्रक्रिया किसी कारण बंद हो गई है। परन्तु आपने दान देने की ऐसी श्रेष्ठ परम्परा आरम्भ कर दी जो भविष्य में आने वाली पीढ़ियों को लाभान्वित करती रहेगी एवं उनके लिए प्रेरणा का स्रोत भी बनी रहेगी जैसे दानवीर भामाशाह देश, धर्म, जाति की रक्षा के लिए दान की तथा महाराजा प्रताप मान और सम्मान की परम्परा छोड़ गये जो आने वाली संतान के लिये प्रकाश स्तम्भ का काम करेगी।

महर्षि दयानन्द जी ने घोर तप, त्याग और कठिन परिश्रम से प्राप्त सदियों से लुप्त वेद ज्ञान के कोष को संसार के समक्ष रखकर सदा–सदा के लिए वेद ज्योति के प्रकाश से मानवता को जगमग कर दिखाया। उन्हीं की प्रेरणा से दीर्घकाल से सोई आर्य जाति जागी और अपने आपको पहचाना। सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर और इस महान ग्रंथ से प्रेरणा लेकर कितने आर्य वीरों ने अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिये हँसते–हँसते अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। कितने वीर और वीरांगनाएँ भविष्य में आने वाली पीढ़ियों के लिए अपना जीवन बलिदान कर राष्ट्र की रक्षा और सम्मान हेतु 'ज्योति पथ' की राहें निश्चित करके चले गये। वेद मंत्र यही शिक्षा दे रहा है कि ज्ञान–विज्ञान, वेद सूत्रों और प्रकाश के मार्गों की अपनी बुद्धि के द्वारा रक्षा करो।

मंत्र में आगे कहा गया है कि –: अनुल्बणं वयत जोगुवामपो :– जीवन रूपी ताना–बाना बुनते समय जो तन्तु टूट जायें उन्हें पुनः जोड़ लेना चाहिये। यदि जोड़ते समय बीच में गांठ पड़ जाये तो कोई बात नहीं, अपनी ज्ञान ज्योति का क्रम जारी रखना चाहिये। जिस प्रकार अपने घरों, सड़कों और मार्गों को हम बार–बार साफ करते हैं फिर भी कई बार उनमें कूड़ा–कर्कट, ईंट–पत्थर या रेत मिट्टी रह जाती है। इसी प्रकार धर्म–मार्ग में भी काम करते समय ईर्ष्या–द्वेष, छल–कपट, स्वार्थ और भ्रष्टाचार रूपी कंकर–पत्थर रुकावट डाला करते हैं। ज्ञान और सहनशीलता सहित कर्त्तव्यपथ पर चलते हुए, श्रेष्ठ कामों को दूषित करने वाले लोगों से बचकर, ज्ञानमार्गो की रक्षा करते हुए आगे बढ़ते चले जायें। जिन प्राचीन वैदिक प्रथाओं को हम भूल गये हैं उन्हें पुनः जाग्रत करने की विशेष आवश्यकता है।

''अनुल्वणम्'' विद्वानों और सामगान करने वाले ऋषियों के उलझन रहित अर्थात् यथोचित कर्मों को, ज्ञान–विज्ञान को आगे बढ़ाओ। जो श्रेष्ठ वैदिक कार्य ऋषि, मुनि, महात्मा लोग ज्ञान मार्गों की रक्षा के लिए करते आये हैं, उन यज्ञीय और परोपकारमय कर्मों को हम भी निःस्वार्थ भाव से लोकहित के लिये करने में अपने आपको समर्पित कर दें। 'परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीडनम्' निष्कामभाव से प्राणीमात्र की सेवा करने में कहीं भी कोई उलझन पैदा नहीं होती। जितनी भी उलझनें पैदा होती हैं, वे सब स्वार्थ के कारण होती हैं।

महर्षि दयानन्द ने अत्यन्त उलझे हुए ज्ञानमार्ग को समझने के लिए कठोर परिश्रम और रात दिन तप करके वैदिक ज्ञान प्राप्त किया। शिक्षा पूरी हो जाने पर गुरु दक्षिणा के रूप में अपना सारा जीवन ही गुरु के अर्पण कर दिया तथा अपना सम्पूर्ण जीवन, बल, बुद्धि और ज्ञान–संसार को वैदिक ज्योति से ज्योतिर्मय करने के लिए समर्पित कर दिया। सदियों से लुप्त हुए वैदिक ज्ञान को संसार के समक्ष प्रस्तुत कर प्रसारित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। गुरु के समक्ष की प्रतिज्ञा को पूर्ण रूपेण निभाया। अपने जीवन की कोई परवाह न करते हुए वैदिक ज्ञान की रक्षा और प्रचार–प्रसार को अपना परम धर्म समझते हुए, अन्त में 'हे ईश्वर! तेरी इच्छापूर्ण हो' कहते हुए अपने जीवन की आहुति देकर संसार के लोगों को वेद–पथगामी बना गये।

एक नहीं, अनेकों ऋषि, महात्मा, विद्वान्, राष्ट्रभक्त, दानी और वीर अपने–अपने क्षेत्र में हमारा मार्ग–दर्शन करके चले गये। अब यह हमें देखना है कि हम इन ज्ञान–मार्गो की रक्षा करने और ऋषियों–मुनियों के ऋण से उऋण होकर अपना कर्त्तव्य पालन करने में कहां तक सफल होते हैं।

शेष पृष्ठ 7 पर

आर्य महासम्मेलन मॉरीशस की चित्रमय झलकियाँ

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्म जयन्ती वर्ष के अवसर पर

विशाल आर्य महासम्मेलन

23 सितम्बर 2023, शनिवार (शहीदी दिवस) स्थान: खटकड़ टोल (जीन्द)

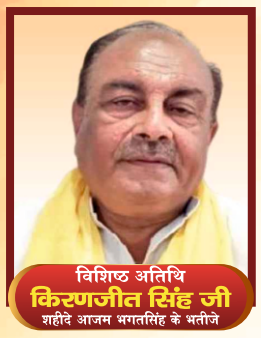
विशिष्ठ अतिथि
किरणजीत सिंह जी
शहीद आजम भगतसिंह के भतीजे

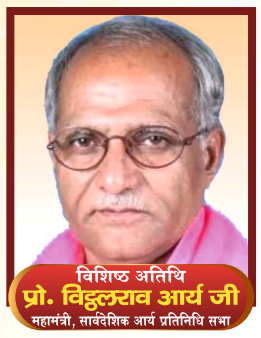
विशिष्ठ अतिथि
प्रो. विडुलराव आर्य जी
महामंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

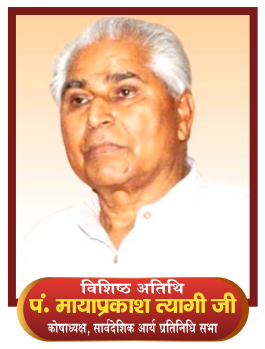
विशिष्ठ अतिथि
पं. मायाप्रकाश त्यागी जी
कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

स्वामी रामवेश जी
अध्यक्ष आयोजन समिति

विशिष्ठ अतिथि
स्वामी ओमवेश जी
पूर्व गन्ना मंत्री, उत्तर प्रदेश

विशिष्ठ अतिथि
वैद्य सत्यप्रकाश आर्य जी
नाड़ी वैद्य कायाकल्प

अध्यक्षता
स्वामी आर्यवेश जी
अध्यक्ष–विशाल आर्य महासम्मेलन

यज्ञ एवं प्रवचन
9 बजे से 10:30

ध्वजारोहण
10:30 बजे

संस्कृति रक्षा सम्मेलन
10:30 से 12:30 बजे तक

महर्षि दयानन्द जन्म जयंती समारोह
12:30 से 3:00 बजे तक

सम्मान समारोह 3:00 बजे

विशेष आमंत्रित

मुख्य अतिथि
चौ. भूपेन्द्र सिंह हुड्डा
पूर्व मुख्यमंत्री

स्वामी प्रणवानंद जी (दिल्ली), स्वामी ओ३मवेश जी, विधायक (चाँदपुर), स्वामी विजयवेश जी (गुरूग्राम), स्वामी नित्यानन्द जी, रोहतक, स्वामी यज्ञमुनि जी, प्रो. विरेन्द्र, राजनैतिक सलाहकार (पूर्व मुख्यमंत्री), श्री आर.एस. तोमर (दिल्ली), डा. अमरजीत शास्त्री (अमेरिका), चौ. हरिसिंह सैनी (पूर्व मंत्री), आचार्य प्रेमपाल शास्त्री (दिल्ली), श्री बिरजानन्द ऐडवोकेट (राजस्थान), बहन पूनम आर्या, बहन प्रवेश आर्या (रोहतक) श्री सहदेव बेधड़क, बहन कल्याणी आर्या

:: निवेदक ::

स्वामी आदित्यवेश
मुख्य संयोजक

रणधीर रेढू ऐडवोकेट
संयोजक

दलबीर आर्य अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा	**सज्जन राठी** कार्यकारी अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा	**अशोक आर्य** प्रदेश महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा	**रामनिवास आर्य** राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद	**धर्मबीर गोईयां** प्रदेश अध्यक्ष लोक शक्ति मंच	**रणबीर सिंह ऐडवोकेट** राष्ट्रीय प्रवक्ता नरवाल खाप	**प्रि. आजाद सिंह** राष्ट्रीय उपमंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद	**चौ. अजित सिंह** पूर्व विधायक
प्रो. आनन्द सिंह अध्यक्ष आर्य केन्द्रीय सभा (करनाल)	**रामबीर आर्य** प्रान्तीय उपाध्यक्ष	**हरपाल आर्य** प्रान्तीय कोषाध्यक्ष	**प्रदीप कुमार** प्रान्तीय प्रवक्ता	**जयपाल आर्य** प्रान्तीय उपाध्यक्ष	**ऋषिराज शास्त्री** प्रान्तीय उपाध्यक्ष	**अजय पाल आर्य** प्रान्तीय उपाध्यक्ष	**राजदेव आर्य** प्रान्तीय उपाध्यक्ष

जिला आयोजन समिति

सतबीर सरपंच, सतबीर पहलवान, देवेन्द्र सहारण, जगफूल ढिल्लों, मांगेराम थानेदार, जयप्रकाश खटकड़, स्वामी मुक्तिवेश, अक्षय लाठर, रघबीर बूरा, योगेश्वर मुनि, सत्यवान कौशिक, ठेकराम सरपंच, सूरजमल पहलवान, सोमवीर पहलवान, मनीष आर्य, श्रवण कुमार आर्य, आशीष सिवाच अजीत गौतम, विरेन्द्र पहलवान, प्रो. धर्मवीर, कर्मपाल आर्य, सूरजमल आर्य, धुलाराम आर्य, महासिंह सरपंच, इन्द्रजीत आर्य, मनजीत कालवा, केवल सिंह आर्य, आचार्य सूर्यदेव दयानन्द आर्य, डा. राजपाल आर्य, कर्ण सिंह रेढू, सुबेर सिंह, रणबीर राठी, आशीष ऐडवोकेट, संदीप बुढ़ायन,

आयोजक : सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद एवं **महर्षि दयानन्द द्वी जन्मशताब्दी आयोजन समिति**
कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली (रोहतक) मो. 9468165946, 9416086348, 9467125438

चलो जीन्द! चलो जीन्द!! चलो जीन्द!!!

विशाल आर्य महासम्मेलन, खटकड़ टोल, जिला–जीन्द (हरियाणा)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में दिनांक 23 सितम्बर, 2023 (शनिवार) को हरियाणा के खटकड़ टोल, जिला–जीन्द में 'विशाल आर्य महासम्मेलन' आयोजित किया गया है। इस विशाल आर्य महासम्मेलन में अधिक से अधिक आर्यजन अपने परिवारजनों एवं साथियों सहित पधारकर सम्मेलन को सफल बनाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दें।

अपराधों से भयभीत समाज

– डॉ. अर्चना प्रिय आर्या

आज चारों ओर भय एवं आतंक का वातावरण बना हुआ है। मनुष्य की अन्तरात्मा इस भय और आतंक के वातावरण से मुक्त होने के लिए चीत्कार कर रही है। समाज का स्वरूप घृणित एवं विकृत होता जा रहा है। भारत का जो समाज समस्त विश्व के लिए एक आदर्श बना हुआ था, वही समाज आज निरन्तर पतन की ओर अग्रसर होता जा रहा है। इन सबका कारण क्या है? यदि इस प्रश्न की ओर ध्यान दिया जाये तो हम इसी अन्तिम निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि आज समाज के अन्दर कुछ ऐसे तत्व जन्म ले रहे हैं जिन्हें अपराधियों की संज्ञा दी जाती है। अब प्रश्न यह उठता है कि अपराध क्या है? वास्तव में जो कार्य अनैतिक होते हैं, समाज के विरूद्ध होते हैं अथवा दूसरे शब्दों में कहा जाये कि जिन कार्यों को हम और आप या यह संसार हेय दृष्टि से देखता है उन्हें अनैतिक घोषित करता है, मानव कल्याण के विरूद्ध बताता है, वह कार्य अपराध कहलाता है।

वर्तमान समाज में चोरी, डकैती, लूटपाट, हत्या, बलात्कार, अपहरण की घटनाएँ आम सी हो गई है। कदम–कदम पर जैसे अपराधियों का जाल सा बिछ गया है, मानवता जैसे समाप्त होती जा रही है। हमारी प्रगति के मार्ग जैसे अवरूद्ध से हो गये हैं, हमारे देश का विकास रूक गया है, देश की आन्तरिक व्यवस्था लड़खड़ा सी गई है। अगर इस दिशा में शीघ्र ही कोई कदम न उठाया गया इनका कोई समाधान ढूँढ़ने की कोशिश नहीं हुई तो निश्चित ही वह दिन दूर नहीं जब हमारे देश में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए किये गये समस्त बलिदान व्यर्थ हो जाएँगें। देश की स्वाधीनता को कायम रखने के लिए यह आवश्यक हो गया है कि उन सभी कारणों को खोजा जाये जो कि अपराध जगत के जन्म के लिए उत्तरदायी हैं। यदि इस विषय पर दृष्टिपात करें तो हम देखेंगे कि कुछ कारण ऐसे हैं जो मानव को विवश कर देते हैं अपराध जगत में पदार्पण करने के लिए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सिद्धान्त को ठुकराने के लिए और उसे इन्सान की खाल में भेड़िया बनने के लिए कोई भी व्यक्ति अपराधी क्यों बनता है? इसके लिए एक सीमा तक उसका वंशानुक्रम उत्तरदायी होता है। जिस व्यक्ति का वंशानुक्रम अच्छा है वह अच्छा एवं सुयोग्य नागरिक बनता हुआ दिखाई देता है और जिन व्यक्तियों के पिता या पूर्वज अपराधी रहे होते हैं, वे स्वयं भी अपराधी ही बनते नजर आ रहे हैं क्योंकि कहा भी है – ''खोदेंगे ही बिल चूहे के जाये'' जीव विज्ञान ने आज इस तथ्य को सिद्ध कर दिया है कि वंशानुक्रम का बच्चे के विकास में बड़ा योगदान है। लेकिन यदि हम मान लें कि बच्चा अपराधी केवल इसलिए बनता है कि उसका वंशानुक्रम दोषपूर्ण रहा तो यह हमारा एक पक्षीय विचार होगा। इसके अतिरिक्त अन्य बहुत से कारण भी बच्चे के अन्दर अपराधवृत्ति जाग्रत करने के लिए उत्तरदायी हैं।

बच्चों को अपराधी बनाने में सबसे बड़ा योगदान समाज का भी होता है। यह समाज ही तो है जो एक बच्चे को क्रूर अत्याचारी तथा भयंकर अपराधी बना देता है और दूसरी ओर कहें तो सुयोग्य नागरिक बनाने में समाज का योगदान रहता है।

बहुत से व्यक्ति अपराधी इसलिए बन जाते हैं कि समाज उनको उपेक्षा की दृष्टि से देखता है जिससे उनके हृदय में हीन भावना घर कर लेती है और तब वह समाज से प्रतिशोध लेने की भावना से अपराधियों की दुनियाँ में कूद जाते हैं।

वर्तमान समय में हमारे देश के सामने विकट समस्या गरीबी और अमीरी की है। एक ओर ऊँची–ऊँची अट्टालिकाएँ खड़ी हुई हैं जिनमें अमीर व्यक्ति ऐश कर रहे हैं, विलासिता में मग्न हैं तो दूसरी ओर फुटपाथ पर दाँत किटकिटाती हुई ठंड में भूखे और नंगे प्राणियों का करूण क्रन्दन है। कहने का तात्पर्य है कि गरीबी–अमीरी के बीच गहरी खाई आज बनी हुई है। गरीबी और अमीरी के इस अन्तर ने न जाने कितने व्यक्तियों को विवश कर दिया शराफत का जामा उतार फेंकने के लिए, विचारणीय विषय है कि कोई व्यक्ति कब तक अन्याय सहन कर सकता है।

फुटपाथ पर पड़ा हुआ एक भूखा एवं नंगा व्यक्ति जब अमीरों की अट्टालिकाओं की ओर देखता है तो उसका हृदय तीव्र वेदना से भर जाता है। वह सोचने लगता है कि आखिर इस व्यक्ति में ही कौन सा चमत्कार है जो यह राजा महाराजा की तरह ऐशो–आराम करे और मैं भूखा नंगा तड़फता रहूँ। उसके मन में ईर्ष्या की अग्नि प्रज्ज्वलित हो जाती है और उसे लूटपाट, चोरी, डकैती आदि की वृत्ति अपनाने के लिए विवश कर देती है।

तन की हवस मन की गुनहगार बना देती है,
बाग के बाग को बीमार बना देती है।
भूखे पेट को देश भक्ति सिखाने वालो,
भूख इन्सान को गद्दार बना देती है।।

यदि आपने अपने इतिहास की तरफ देखा हो तो इस बात का साक्ष्य मिलता है कि हमारे देश में जितने डकैत आदि बने वह हमारे ही द्वारा बनाये गये थे और आज भी देखने को मिलता है कि जो लोग अपराधी बनते हैं उनके ज्यादातर अपराधी बनने का कारण होता है कि समाज के ठेकेदार उन्हें झूठे मुकदमों में फंसाकर पैसे के बल पर सज़ा दिलवा देते हैं। तब प्रतिशोध की भावना इन्हें विवश करती है ये सब करने के लिए समाज के इन ठेकेदारों ने ही समाज को विकृत कर डाला है।

वेश्यावृत्ति जो कि एक भयंकर अपराध है समाज के मस्तक पर कलंक है, वह भी तो इन्हीं की देन है। मैंने जब एक वेश्या से पूछा कि क्या तुम्हें इस प्रकार से समाज को कलंकित करना अच्छा लगता है तो उसने कहा कि 'एक दिन वह था जब मैं अबला नारी दर–दर की ठोकरें खा रही थीं, अपने लिए आश्रय खोज रही थी, समाज के इन ठेकेदारों ने मुझे कलंकित कर दिया फिर 'कलमुँही' और न जाने कितनी उपाधियों से इस समाज ने मुझे विभूषित कर दिया, तब मैंने सोचा क्यों न इस घृणित समाज के ऊपर मैं कलंक बन जाऊँ, क्यों न इस समाज को तहस–नहस कर दूँ।

वास्तव में मानव अपने आप इस प्रश्न का समाधान करने की कोशिश करे कि समाज का उसके जीवन में क्या महत्त्व है तो पता चलेगा कि अच्छा या बुरा समाज हमको बहुत कुछ सिखाता है। बच्चा जब इस समाज में आता है तो वह यह भी नहीं जानता कि उसकी माँ कौन है और पिता कौन? इन सम्बन्धों का ज्ञान भी बच्चा समाज में आकर करता है। परिवार में जिस प्रकार का वातावरण बच्चे को मिलता है, वह उसी प्रकार का बनने की कोशिश करता है यदि परिवार में उसे अनुकूल एवं प्रेम तथा स्नेह का वातावरण मिलता है तो बच्चा एक ऐसा इन्सान बन जाता है जो कि संसार के लिए एक आदर्श होता है। इसके विपरीत यदि परिवार में कलहपूर्ण वातावरण रहता है, घर का प्रत्येक सदस्य अपने आप में ही खोया रहता है, आपस में एक दूसरे के बीच खिंचाव की भावना बनी रहती है या बच्चों के ऊपर माता–पिता का समान स्नेह नहीं रहता तो बच्चा अपने आपको हीन समझने लगता है। परिणाम यह होता है कि उसकी यह हीनता की ग्रन्थि आक्रोश में बदल जाती है और वह समाज का खतरनाक शत्रु बन जाता है। किसी विद्वान् ने ठीक कहा है कि ''प्राणी के लिए संसार में सबसे बड़ा और सबसे पहला विद्या मन्दिर उसका परिवार होता है। यद्यपि किसी भी घर में प्रत्यक्ष रूप से विद्यालयों की तरह शिक्षा नहीं दी जाती है लेकिन फिर भी परिवार का वातावरण प्राणी को कुंठाओं से युक्त इस प्रकार का बना देता है कि वह समाज का मुकाबला नहीं कर पाता तथा वही प्राणी को गद्दार बना देता है। वास्तव में मानव अपने ऊपर निर्भर नहीं होता है, वह तो पारिवारिक वातावरण का खिलौना मात्र होता है उसको बनाने और बिगाड़ने में सबसे बड़ा उत्तरदायित्व पारिवारिक वातावरण का होता है, अन्य सभी तो अंश मात्र के सहयोगी होते हैं।

आज हमारे देश में निरन्तर बेरोजगारी बढ़ती जा रही है जो कि वास्तव में अपराधों को प्रोत्साहित कर रही है क्योंकि खाली दिमाग शैतान का घर होता है। खाली बैठे–बैठे मनुष्य ऐसी विभिन्न योजनाएँ बनाता रहता है जो उसे भूखा मरने से बचा सके और जब वह उन योजनाओं को कार्यान्वित करता है तो जेब कतरों, लुटेरों, चोरों आदि के दर्शन होते हैं।

वर्तमान शिक्षा रोजगारोन्मुखी नहीं है। अतः जब विद्यार्थी डिग्रियाँ लेकर निकलता है तो दर–दर ठोकरें उसका स्वागत करती हैं। उसे भटकने के सिवाय और कुछ प्राप्त नहीं होता है। दूसरी ओर भ्रष्टाचार अपनी चरमसीमा से अधिक व्याप्त हो गया है। अयोग्य व्यक्ति रिश्वत के सहारे चुन लिये जाते हैं और योग्य व्यक्ति चुनने से केवल इसलिए वंचित रह जाते हैं कि उनके पास चयनकर्ताओं की पूजा करने के लिए धन–दौलत नहीं होती या किसी मंत्री आदि की सिफारिश नहीं होती। इस प्रकार ऐसे व्यक्ति कुंठित हो जाते हैं और ऐसे कार्य करना प्रारम्भ कर देते हैं जिन्हें हम और आप अनैतिक कार्य की संज्ञा देते हैं घृणित दृष्टि से देखते हैं अर्थात् अपराध करना शुरू कर देते हैं। वर्तमान समय में हमारे देश में हमारी सभ्यता और संस्कृति के ऊपर पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति हावी होती जा रही है जिसके कारण हम उस धर्म को भूल गये हैं जिसके भय से हम अपराध करने से डरते थे। अब तो स्वार्थपूर्ति ही हमारा लक्ष्य और हमारी भावना बन गई है। इस कारण बहुत से व्यक्ति न चाहते हुए भी अपराध की दुनियाँ की ओर मुड़ रहे हैं।

अस्वस्थ मनोरंजन जैसे सिनेमा आदि भी इस क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। इसमें दिखाई जाने वाली हिंसात्मक प्रवृत्ति से अपराधी इसलिए बन जाते हैं कि सिनेमा में उनकी पसंद का कलाकार खलनायक बनता है। मदिरा का प्रभाव भी काफी हद तक इस विषय के लिए उत्तरदायी है। मदिरापान करने के पश्चात् अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठता है जिससे वह असामाजिक और अनैतिक कार्य करने लगता है।

इसके अतिरिक्त अन्य बहुत से और भी कारण हो सकते हैं जो कि अपराध जगत के जन्म एवं विकास के लिए उत्तरदायी हैं। लेकिन कुछ भी सही यदि हमें अपने समाज और देश को आगे ले जाना है तो इन अपराधों को खत्म करने की दिशा में प्रयत्न करना होगा। इसके लिए हम सभी समाज के विकृत स्वरूप को बदलने की पहल करें। समाज की ऐसी अव्यवस्था को दूर करें जो किसी व्यक्ति को अपराधी जीवन बिताने के लिए विवश कर देती है। हमको चाहिए कि हम पारस्परिक वातावरण को समुचित बनायें। भ्रष्टाचाररूपी राक्षस से शक्ति के साथ निपटें व एक स्वच्छ समाज बनाने का प्रयत्न करें।

यदि हम अपने नैतिक स्तर को स्वार्थपूर्ति की भावना से परे विकसित करें तो निश्चय ही हम अपराधों को समाप्त करने में सक्षम होंगे और हमारा समाज पुनः खोई हुई प्रतिष्ठा और गौरव को प्राप्त कर सकेगा तथा एक बार फिर हमारा समाज तथा हमारा देश समस्त विश्व के लिए आदर्श बन सकेगा तथा फिर वह दिन होगा जब –

कहेगा जगत फिर से एक स्वर में सारा।
वही पूज्य भारत गुरू है हमारा।।

– ऊँचागाँव नसीरपुर, हाथरस, उ. प्र.

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के पूर्व महामंत्री श्री सत्यवीर शास्त्री जी का आकस्मिक निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के पूर्व महामंत्री एवं हरियाणा अध्यापक संघ के पूर्व प्रधान श्री सत्यवीर शास्त्री जी का विगत 17 अगस्त, 2023 को लगभग 85 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। श्री शास्त्री जी बहुत ही कर्मठ एवं लगनशील आर्य नेता तथा समाजसेवी थे। उन्होंने अपने जीवनकाल में स्वामी दयानन्द जी के सिद्धान्तों पर चलते हुए अनेकों कार्य किये। ऐसे कर्मठ आर्य नेता का हम सबके बीच से अचानक चले जाना जहां उनके परिवार की अपूर्णीय क्षति हुई है वहीं आर्य जगत् तथा राष्ट्र की भी अपूर्णीय क्षति हुई है। श्री सत्यवीर शास्त्री जी के निधन पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने गहरा दुःख प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा शोकाकुल परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दें।

आर्य जगत के कर्मठ एवं दानवीर भामाशाह – ठाकुर विक्रम सिंह

– आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री

शास्त्रकार कहते हैं कि उसका ही जीवन सार्थक है जो समाज के लिए जीता है। योग्य व्यक्ति समाज को दिशा देता है, गौरवान्वित करता है और युगों–युगों तक उनकी कीर्ति विद्यमान रहती है।

एकेनापि सुपुत्रेण विद्यायुक्ते च साधुना।
आह्लादितं कुलं सर्वं यथा चन्द्रेण शर्वरी।।

जिस प्रकार अकेला चन्द्रमा रात की शोभा बढ़ा देता है, ठीक उसी प्रकार एक ही विद्वान्, सज्जन पुत्र कुल की शोभा और ख्याति बढ़ा देता है।

एकोऽपि गुणवान् पुत्रो निर्गुणैश्च शतैर्वरः।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च ताराः सहस्रशः।।

जिस प्रकार एक चाँद ही रात्रि के अन्धकार को दूर करता है, असंख्य तारे मिलकर भी रात्रि के गहन अन्धकार को दूर नहीं कर सकते।

एकेनापि सुपुत्रेण सिंही स्वपिती निर्भयम्।
सहैव दशभिः पुत्रैः भारं वहति गर्दभी।।

यदि संतान सुपुत्र या सुपुत्री हो तो एक ही संतान माता–पिता को धन्य कर सकती है, अन्यथा दसों कुपुत्र संतानों को जन्म देने के बाद भी माता–पिता अभावग्रस्त देखे जा सकते हैं।

जननी जने तो संत जने या दाता या सूर।
नहीं तो जननी बाँझ रहे, काहे गवांये नूर।।

ऋग्वेद में कहा गया है कि दिव्य संतानों को जन्म देना ही व्यक्ति का कर्तव्य है। अयोग्य और निकम्मी संतान कुल को नष्ट कर देती है। इसीलिए गोस्वामी तुलसीदास सहित शास्त्रकारों ने लिखा है कि योग्य संतान ही सुख का कारण बनती है और अयोग्य संतान दुःख का कारण बनती है।

जंगल के राजा सिंह (शेर) की गर्जना तो केवल जंगल तक ही सीमित होकर रह जाती है। परन्तु 19 सितम्बर, 1943 को उच्च राजपूत परिवार में जन्मे ठाकुर विक्रम सिंह की वैदिक एवं राष्ट्रीय गर्जना न केवल दिल्ली या भारत अपितु पूरे विश्व में स्पष्ट सुनी जा सकती है। आपके दादा लटूर सिंह जी ने मेरठ के सूरज कुण्ड में स्वामी दयानन्द जी से प्रभावित होकर आर्य मान्यताओं को अपने जीवन में अपनाया, इसी कारण आर्य सिद्धान्तों के बीज बचपन में ही आपके जीवन में बोए गए थे। मेरठ विश्वविद्यालय से एम. ए. की परीक्षा उतीर्ण करने के बाद आर्य समाज के उपदेशक विद्यालय से वैदिक सिद्धान्तों को अध्ययन करने के साथ–साथ पूज्य अमर स्वामी जी महाराज एवं पं. रामचन्द्र देहलवी जी के चरणों में स्थान पाकर शास्त्रार्थ के गुर सीखने का जो अवसर प्राप्त हुआ, उनके ऋण से उऋण होने के उद्देश्य से आपने 20 वर्ष तक आर्य समाज की सेवा करके आर्य समाज को लाभान्वित किया। महर्षि दयानन्द एवं मनु के विरोधियों को मुंहतोड़ जवाब देने के लिए आपने मनु संस्कृति संस्थान की स्थापना करके अनेकों पुस्तकों का प्रकाशन किया–उदाहरण के लिए (1) मनुस्मृति के स्वर्णाक्षर, (2) क्रान्ति की चिंगारियाँ, (3) सोम सोपान, (4) पाखण्डी गुरु, (5) करवा चौथ का व्रत, (6) शोभाराम प्रेमी भजनावलि, (7) कुरान के बारे में, (8) नेहरू गांधी वंश, (9)

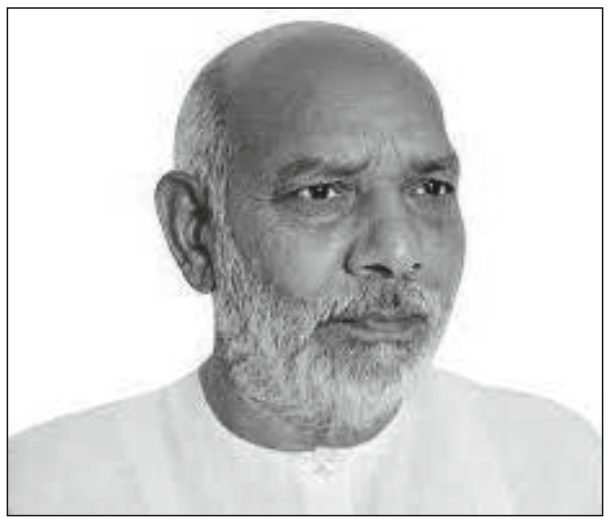

स्वामी भीष्म के क्रान्ति गीत, (10) लटूर सिंह भजनावलि, (11) आज का भारत पतन ही पतन, (12) भारतीयों जागो, (13) सिंह गर्जना कु. सुख लाल मुसाफिर, (14) महाभारत की कहानियाँ, (15) अमर स्वामी अभिनन्दन ग्रन्थ, (16) मुसाफिर अभिनन्दन ग्रन्थ।

कोई भी संस्था अपने सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार में तभी सफल हो सकती है जब उचित वातावरण उपलब्ध हो, वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार में होने वाली मुश्किलों का समाधान निकालने के लिए आपने राष्ट्र निर्माण पार्टी का निर्माण किया। आपकी पार्टी का मुख्य उद्देश्य कुछ इस प्रकार चिन्हित किए जा सकते है :– आर्य संस्कृति का संरक्षण, हिन्दु हितों की रक्षा एवं भ्रष्टाचार का विरोध। आप महर्षि दयानन्द के विचार, विदेशी राजा कितना भी धर्मात्मा क्यों न हो स्वदेशी राजा से अच्छा नही होता, को, आधार बना कर देश में राष्ट्रभक्तों के शासन के द्वारा सुखी, शान्त एवं समृद्ध राष्ट्र की कल्पना को चरितार्थ करना चाहते हैं। आज इस सबके विपरीत आतंकवाद, भूखमरी, बेरोजगारी, प्रान्तवाद, जातिवाद जैसी अनेकों समस्याएं राष्ट्र को खोखला करने में दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति कर रही हैं। आज जबकि भारत की राजनीति में अवसरवाद, नेता केवल अपना उल्लू सीधा करने में लगे हुए हैं, ऐसे समय में आप की पार्टी केवल समाज से कुरीतियों को दूर करने को उचित मानते हुए उन्हें दूर करने के लिए निरन्तर प्रयासरत है।

ठाकुर जी ने व्यापार में अपार सफलता के द्वारा अर्जित किए गए धन का जो सदुपयोग किया है, वह अपने आपमें एक अद्भुत मिसाल है। आपने समय–समय पर वैदिक विद्वानों, आर्य प्रकाशकों, आर्य लेखकों, वैदिक प्रचारकों, वैदिक भजनोपदेशकों को सम्मानित एवं पुरस्कृत करके उनका उत्साहवर्धन किया, क्योंकि आपका मानना है कि अगर इन सभी का उत्साहवर्धन नहीं किया गया तो मूर्ति पूजा और भागवत कथाओं को बढ़ावा देने वाले बाबाओं और पाखंडियों को रोकना सम्भव नहीं हो पाएगा। आपने आर्य समाज के गुरुकुलों और विद्यालयों की समस्याओं को एक अलग दृष्टि से समझा और उनका समाधान निकालने में भरपूर सहयोग करने का प्रयास कर रहे हैं।

अन्त में ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर आपको स्वस्थ दीर्घायु जीवन प्रदान करें और आपको इतनी शक्ति प्रदान करें कि आप वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार के कार्यों को अधिक सुचारु रूप से करने में सफल होवें। विलक्षण प्रतिभा के धनी, परोपकारी, समाजसेवी, आर्य हृदय सम्राट, क्षत्रियों के गौरव, ओजस्वी वक्ता एवं आर्य जगत के भामाशाह ठाकुर विक्रम सिंह जी का जन्मदिन 19 सितम्बर को है। इस अवसर पर हम उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व का बखान करते हुए उनका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

**(संपादक, अध्यात्म पथ, फ्लैट नंबर सी–1,
पूर्ति अपार्टमेंट, एफ. ब्लॉक, विकासपुरी,
नई दिल्ली–110018,
मो. 9810084806)**

श्रेष्ठ परम्पराओं की रक्षा करें

'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् :– मंत्र का अन्तिम भाग मनुष्य को 'मनुष्य' मननशील बनने और दिव्य गुण, कर्म, स्वभाव वाली संतान उत्पन्न करने अथवा श्रेष्ठ, धर्मात्मा, परोपकारी, सत्यनिष्ठ एवं वेदपथ पर चलने वाले समाज के निर्माण की योजना पर चलने के लिए प्रेरित कर रहा है। मंत्र का यह बहुत महत्त्वपूर्ण भाग है।

वेद कहता है 'मनुष्य बनो' परन्तु लोगों के सामने जब यह बात कहते हैं तो वे उत्तर देते हैं कि संसार में लोगों की क्या कमी है। इस धरती पर वर्तमान समय में कई अरब जनंसख्या है। क्या आपको इनमें कोई मनुष्य ही नहीं दिखाई देता? मैंने बैठ कर विचार किया तो मनुष्य एवं पशु में स्पष्ट अन्तर दिखाई देने लगा। किसी कवि ने इस विषय में कहा है–

**येषां न विद्या न तपो न दानं,
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता,
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।**

जिन लोगों का मन विद्या में रत नहीं है अर्थात् जो व्यक्ति विद्या के स्वरूप को न जानकर केवल अक्षर ज्ञान में रत होकर अपने आपको विद्वान समझते हैं और ब्रह्म प्राप्ति के साधन कुछ भी नहीं करते, वेद शास्त्रानुकूल जिनका आचरण नहीं, आत्मकल्याण के मार्ग का जिनको पता नहीं, विद्या पढ़कर जिसने इहलोक और परलोक का सुधार नहीं किया, विद्या के द्वारा जिन्होंने तीन अनादि पदार्थों को जानकर मानव जीवन के परम उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति का यत्न नहीं किया तो मनुष्य होने का अर्थ ही क्या है?

उक्त गुणों के बिना मनुष्य रूप में पशु ही धरा धाम पर विचरण कर रहे हैं। हम इन गुणों के आधार पर मनुष्य और पशु में विश्लेषण करें तो मनुष्यता का परिणाम कितने प्रतिशत आयेगा? जब परिणाम ही मनुष्यता का संतोषजनक नहीं है अर्थात् हम मानवीय गुणों में फेल हैं तो धर्म कौन करेगा? और धर्म के बिना सुख कहाँ से आयेगा? इसी आधार पर मंत्र में कहा गया है कि 'मनुर्भव अर्थात् हे मनुष्य यदि तू सुख, शांति, आनन्द और मोक्ष चाहता है तो मानवता के मार्ग पर चलना आरम्भ कर दे, इसी में तेरा कल्याण है।

''जनया दैव्यं जनम्'' वेद मंत्र के इस वाक्य द्वारा पूर्णतः यह समझाया गया है कि पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति हेतु संसार का ताना–बाना बुनते हुए अर्थात् अपने दैनिक कार्यों को ठीक–ठीक धर्म पूर्वक करते हुए, सूर्य का अनुकरण करना। ज्ञान मार्गों की रक्षा करना। श्रेष्ठ काम करने वाले लोगों के कर्मों को आगे बढ़ाने का पूरा प्रयत्न करना। ये सभी कार्य मनुष्य बनकर चलने से ही होंगे। इसलिये जीवन में मानवता धारण करके चलना। परन्तु एक बात पर विचार कर कि जिन कल्याणकारी कर्मों को करने की तूने प्रतिज्ञा की है, तेरे संसार से चले जाने के बाद इन ज्ञान तन्तुओं को कौन विस्तृत करेगा, इस ज्ञान गंगा को कौन बहायेगा? कौन चलायेगा इस दुनिया को वेद मार्ग पर? इसके लिए एक काम करना 'जनया दैव्यं जनम्'' अर्थात् दिव्य गुण, कर्म, स्वभावयुक्त संतान उत्पन्न करके जाना अर्थात् श्रेष्ठ गुणों वाले समाज का निर्माण करना, जिसका लक्ष्य मानवता को सत्य, अहिंसा, परोपकार, तप और कर्त्तव्यपालन के मार्ग पर आरूढ़ करना हो। आज मनुष्य–मनुष्य के साथ जितना छल–कपट, अत्याचार और स्वार्थपूर्ण व्यवहार कर रहा है इतना तो कोई पशु भी नहीं करता।

प्राचीन इतिहास का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि जब तक आर्य–जाति इस मंत्र पर विचार करके संसार को धर्म–मार्ग दिखाती रही तब तक भारत संसार का गुरु कहलाया। जरा रामायण काल को देखें, राम की महानता किस बात में थी? राम की महानता 'मर्यादापालन' और 'धर्मपालन' में थी। उन्होंने केवल अपने ही कुल की मर्यादा को कायम नहीं रखा अपितु संसार के सम्मुख एक आदर्श आज्ञाकारी, तपस्वी, त्यागी पुत्र, विशाल हृदय भाई, विश्वासी मित्र, निर्लोभी शासक एवं दुष्ट दलनकारी क्षत्रिय के रूप में आने वाली पीढ़ियों के लिए अमरता का दीपक जला दिया, जिसके दिव्य प्रकाश में हम युग–युग तक अपने जीवन की राहें निश्चित करते रहेंगे।

इसी प्रकार श्रीकृष्ण के जीवन की महानता 'योग' में थी। वे महान् योगीराज, कुशल राजनीतिज्ञ, पापियों के दलनकर्ता, निरभिमानी, निर्भीक, दूरदर्शी एवं सफल प्रशासक थे। उन्होंने उस समय अनेक छोटे–छोटे राज्यों में बिखरे राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने का पूर्ण प्रयत्न किया।

महर्षि दयानन्द के उपकारों को हम कभी नहीं भुला सकते और उनके ऋण से कभी उऋण भी नहीं हो सकते। महर्षि ने अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु घोर तप, त्याग एवं परिश्रम किया। संसार को सदियों से भूले वैदिक ज्ञान से ज्योतिर्मय कर गये। किसी कवि ने सच कहा है कि–

**सौ बार जन्म लेंगे, सौ बार फना होंगे,
अहसान दयानन्द के फिर भी न अदा होंगे।**

अतः हम सबका कर्तव्य है कि ऋषियों द्वारा बताये ज्ञान मार्गो की रक्षा करते हुए 'मनुर्भव' के नारे को जीवन में सार्थक करें।

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- ***www.facebook.com/SwamiAryavesh*** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
दूरभाष : 011-42415359, 23274771)

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पृष्ठ 1 का शेष

मॉरीशस में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 27 से 30 जुलाई, 2023 की तिथियों में हुआ सम्पन्न

इस अवसर पर विभिन्न भजनोपदेशकों द्वारा भजन प्रस्तुत किए गए। इसी कार्यक्रम में 108 कुंडीय यज्ञ का भी आयोजन किया गया जिसमें देश की उपप्रधानमंत्री श्रीमती लीला देवी लक्ष्मण भी शामिल हुई। उन्होंने कहा कि आज पूरी दुनिया में ग्लोबल वार्मिंग का खतरा बताया जा रहा है जबकि आज पूरी धरती ग्लोबल वार्मिंग नहीं बल्कि ग्लोबल बॉयलिंग से प्रभावित है।

संस्कृति मंत्री श्री अविनाश ने कहा कि मुझे गर्व है कि मैं गिरमिटिया की संतान हूं। आज उनके कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए भी हम संकल्पित हैं।

मॉरीशस के दूसरे उपप्रधानमंत्री लुईस स्टीवन ओबिगाडू ने कहा कि आर्य समाज का देश के सर्वांगीण विकास में योगदान को कोई नहीं भूला सकता।

आर्य समाज युवाओं के निर्माण के लिए जो भी योजना प्रारंभ करेगा सरकार उसमें भरपूर सहयोग करेगी। उन्होंने इस अवसर पर विदेशों से आए प्रतिनिधियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

आयोजन सीमित के प्रधान आर्य नेता श्री उदय नारायण गंगू ने सभी का आभार प्रकट किया। आयोजन सीमित के मंत्री श्री राजनारायण गत्ती ने समापन समारोह का संचालन किया।

कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि मंडल ने आर्य सभा मॉरीशस के प्रधान श्री राजेंद्र प्रसाद, महामंत्री श्री विजय रामचरण, कोषाध्यक्ष श्री पूनम तिलकधारी, श्री उदयनारायण गंगू, श्री राजनरायण गत्ति को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

सभी प्रतिभागियों को आयोजकों की ओर से प्रमाण पत्र भेंट किए गए। भारतीय प्रतिनिधि मंडल ने 1834 में भारतीय लोगों को मजदूर बनाकर जिस जगह लाया गया उस अप्रवासी घाट (वर्ल्ड हेरिटेज) के अतिरिक्त कई आर्य समाजों में भी गये। विदित हो कि मॉरीशस में 450 से ज्यादा आर्य समाज की शाखाएं हैं। अपना एक महाविद्यालय है, 3 स्कूल, 6 सेवा संस्थान हैं जिनके माध्यम से कार्य किया जा रहा है।

मॉरीशस के राष्ट्रपति महामहिम श्री पृथ्वी राज सिंह रूपन अपनी ओर से प्रतिनिधि मंडल को सहभोज के लिए आमंत्रित किया। महामहिम के आग्रह को स्वीकार करते हुए सभी प्रतिनिधिमण्डल ने सहभोग में सम्मिलित हुए।

स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में भारतीय प्रतिनिधि मंडल में पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, सार्वदेशिक

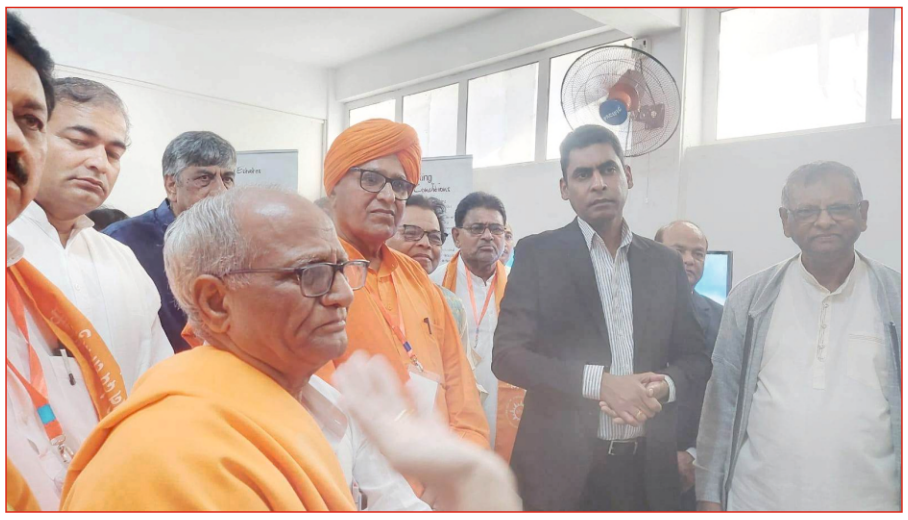

सभा के कोषाध्यक्ष पंडित माया प्रकाश त्यागी जी, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, सभा के उपमंत्री श्री मधुर प्रकाश जी, मेजर विजय आर्य जी, आर्य वीर दल राजस्थान के अधिष्ठाता श्री भंवर लाल आर्य जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानंद जी, मंत्री श्री कमलेश शर्मा जी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् पंजाब के प्रधान डॉ. नवीन आर्य जी, डॉ. इंद्रजीत शास्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा तेलंगाना आंध्र प्रदेश के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. हरिकृष्ण वेदालंकार जी, गुरुकुल पौंधा के आचार्य डॉ. धनंजय आर्य जी, श्री रत्न देव शास्त्री जी, श्री यज्ञदत्त आर्य जी, श्रीमती सरोज आर्या जी, ग्वालियर से श्री अशोक आचार्य जी, श्री रोशनलाला जी जोधपुर आदि शामिल रहे। भारत से गए प्रतिनिधि मंडल की सारी व्यवस्था आचार्य जितेंद्र पुरुषार्थी जी ने संभाली।

दयानन्द मठ के 43वें वार्षिकोत्सव एवं 23वें दुर्लभ शादर यज्ञ का निमन्त्रण प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष 12 से 16 अक्टूबर, 2023 की तिथियों में वार्षिकोत्सव एवं दुर्लभ शारद यज्ञ आयोजित होगा

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी 12 से 16 अक्टूबर, 2023 की तिथियों में दयानन्द मठ चम्बा का वार्षिकोत्सव समारोह एवं 23वाँ दुर्लभ शारद यज्ञ धूमधाम से मनाया जायेगा। इस शारद यज्ञ में आप सभी से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर अपनी–अपनी आहुतियां प्रदान करें। यूं तो आप सभी लोग अपने घरों, अपने परिवारों में नित्य अग्निहोत्र करने वाले हैं। जो कि बहुत अच्छी बात है। अपने परिवारों में नित्य यज्ञ करते रहें, महान कल्याण होगा। इसके बाद भी मैं बार–बार आप लोगों को इस यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए आग्रह करता रहता हूँ। जहां बड़े–बड़े यज्ञ हो रहे हों वहां भी कभी कभार जाना चाहिए। उनमें भी अपनी आहुतियां समर्पित करनी चाहिए उसका अपना विशेष महत्त्व है।

महान कल्याणकारी इस दुर्लभ शादर यज्ञ का फल हम सभी को, आप सभी को प्राप्त हो इसी कामना से इस यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए अपनी आहुतियां समर्पित करने के लिए आप लोगों को बार–बार आमन्त्रित करता हूं। अतः आओ हम सब मिलकर इस महान यज्ञ अभियान को सम्पन्न करें। अतः एक बार पुनः निवेदन कर रहा हूँ कि आप लोग इस यज्ञ में अवश्य आवें। अथवा इसकी सम्पन्नता के लिए अपना–अपना अशंदान, सहयोग राशियां अवश्य ही भेजें। ईश्वर सबका कल्याण करें।

धन्यवाद

सहयोग राशियाँ निम्नलिखित बैंक खाते में भेजें :–

बैंक – स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
नाम – दयानन्द मठ चम्बा
खाता न0–11149833806
IFSC-SBIN0000626

– आचार्य महावीर सिंह
दयानन्द मठ चम्बा (हि० प्र०),
सम्पर्क सूत्र –94180–12871

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-42415359, 23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।